B. A. - I (HISTORY) HONOURS, 2020.

NOTES PREPARED BY →

DR. MANITA KUMARI YADAV
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HISTORY
VAISHALI MAHILA COLLEGE
HAJIPUR, BIHAR UNIVERSITY
MUZAFFARPUR.

Scanned with CamScanner

:- मूल रूप से राष्ट्रवादी इतिहासकारों का ~~के~~ मानना है कि हर्षवर्द्धन भारत का अंतिम हिन्दू सम्राट था, जिसने संपूर्ण भारत को आच्छादित कर लिया था। परंतु बाणभट्ट की रचना हर्षचरित एवं कादम्बरी, हर्षवर्द्धन नागानन्दा, प्रियदर्शी एवं रत्नावली तथा हर्षवर्द्धन के तीन महत्वपूर्ण ~~के~~ ताम्रपत्र मधुबन ताम्रपत्र अभिलेख, बाँसखेड़ा ताम्रपत्र अभिलेख, तथा सन्नीपट्ट ताम्रपत्र अभिलेख से स्पष्ट होता है कि ~~कि~~ हर्षवर्द्धन को अंतिम हिन्दू 'शासक नहीं माना जा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रारंभ में हर्षवर्द्धन सनातन धर्म

Scanned with CamScanner

(हिन्दू धर्म) को स्वीकार कर लिया परंतु बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया। यहाँ एक प्रश्न उठता है हर्षवर्धन के संपूर्ण उत्तरभारत में साम्राज्य विस्तार को।

हर्षवर्धन ने कश्मीर को छोड़कर केवल उत्तर भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार किया था। इस बात की पुष्टि ऐहोल अभिलेख से भी होता है। जिसमें उसे उत्तरापथस्वामिन् अर्थात् उत्तर भारत का स्वामिन् कहा है। इस बात का कोई भी प्रमाण नहीं मिलता है कि दक्षिण भारत में हर्षवर्धन ने दक्षिण भारत में विजयी प्राप्त की हो।

हर्षवर्धन स्वयं उच्च कोटि का विद्वान था क्योंकि इसने नागानन्द, प्रियदर्शिका और रत्नावली नामक तीन पुस्तक की रचना की। बाणभट्ट जिसने ऐतिहासिक विषय पर गद्य-काव्य लिखने का प्रथम प्रयास किया। इसी के दरबार में रहते थे।

बाणभट्ट के द्वारा कादम्बरी एवं हर्षचरित की रचना की गई। मयूर नामक विद्वान भी हर्षवर्धन के ही दरबार में रहते थे, जिसने मयूरशतक और सूर्यशतक नामक पुस्तक की रचना की। मयूरशतक कुष्ठ रोग पर लिखा गया प्राचीन भारत का प्रथम महत्वपूर्ण ग्रंथ है, चूँकि इस ग्रंथ में सूर्य की उपासना के माहात्म

Scanned with CamScanner

से कुष्ठ रोग को दूर करने का उपाय बताया गया है। इसी कारणवश मयूरवंश के आधे खण्ड को सूर्य शतक के नाम से जाना जाता है।

प्राचीन विद्वान हरिषेण व जयसेन हर्षवर्द्धन के ही दरबार में रहते थे। जयसेन ने जयसिद्धिका नामक पुस्तक की रचना करके उसने पुस्तक के आधे खण्ड में युद्ध के नियमों की रचना की है, जबकि पुस्तक के आधे खण्ड में हर्षवर्द्धन का प्रशस्ति-पत्र है, क्योंकि इस पुस्तक में हर्षवर्द्धन की तुलना कालीदास एवं भारवि से की है।

यद्यपि गुप्तोत्तर काल के सिक्के अत्यंत ही कम मिले हैं। परंतु हर्षवर्द्धन के दो सिक्के एक नालंदा तथा दूसरा सोनीपत (हरियाणा) से प्राप्त हुआ है, इन मुद्राओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन मुद्राओं के एक तरफ शिव का वाहन नन्दी तथा दूसरी ओर श्रीहर्ष शब्द अंकित है। यह विडम्बना है कि बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेने के पश्चात् हर्षवर्द्धन का कोई सिक्का प्राप्त नहीं हुआ है।

हर्षवर्द्धन ने सार्वभौम, राजाधिराज, महेश्वर तथा उत्तरापथस्वामिन् की उपाधि धारण की थी।

Scanned with CamScanner

ह्वेनसांग हर्षवर्धन को शिलादित्य कहकर संबोधित करता है। प्रसिद्ध इतिहासकार राधा कुमुद मुखर्जी ने हर्षवर्धन में अशोक एवं समुद्रगुप्त दोनों का संयुक्त मिश्रण बताया है।

बैहोल अभिलेख हर्षवर्धन की एकमात्र विजय की सूचना प्रदान करता है। इसमें वर्णित है कि हर्षवर्धन ने 643 ई० में कंगोद (कश्मीर) पर विजय प्राप्त की।

हर्षवर्धन के द्वारा कन्नौज एवं प्रयाग में ने बौद्ध महामोक्ष परिषद् की भी व्यवस्था की।

Scanned with CamScanner